वर्ष 12, अंक 40, जनवरी -मार्च 2022

मूल्य
₹120/-

UGC Care Listed

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

ISSN-232[illegible]-1534 Nagfani RNI No. UTTHIN/2010/34408

नागफनी

अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य

ISSN-2321-1504 Nagfani RNI No.UTTHIN/2010/34408

नागफनी

A Peer Reviewed Referred Journal

(अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य)

UGC Care Listed त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

ISSN-2321-1504 Naagfani RNI No. UTTHIN/2010/34408

वर्ष 12,अंक 40,जनवरी - मार्च 2022

संपादक
सपना सोनकर

सह-संपादक
रूपनारायण सोनकर

कार्यकारी संपादक
डॉ. एन. पी. प्रजापति
प्रोफेसर बलिराम धापसे

अतिथि संपादक
प्रोफेसर दिनेश कुशवाह

सलाहकार मंडल (Peer Review Committee)

प्रोफेसर विष्णु सरवदे, हैदराबाद (तेलंगाना)
प्रोफेसर किशोरी लाल रैगर, जोधपुर (राजस्थान)
प्रोफेसर आर.जयचंद्रन तिरूअनंतपुरम (केरल)
डॉ. एन. एस. परमार, बड़ोदा (गुजरात)
डॉ. दिलीप कुमार मेहरा, बी.बी. नगर (गुजरात)
प्रोफेसर विजय कुमार रोड़े, पुणे (महाराष्ट्र)
प्रोफेसर संजय एल. मादार, धारवाड (कर्नाटक)
प्रोफेसर गोविन्द बुरसे, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ. दादासाहेब सालुंके, औरंगाबाद(महाराष्ट्र)
प्रोफेसर अलका गड़करी, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ. साहिरा बानो बी. बोरगल, हैदराबाद (तेलंगाना)
डॉ. बलविंदर कौर, हैदराबाद (तेलंगाना)
डॉ.उमाकांत हजारिका,शिवसागर (असम)

मुख पृष्ठ- डॉ.शेख आजम,मैत्री ग्राफिक्स,सावंगी (ह),औरंगाबाद

प्रकाशन/मद्रण

प्रकाशक रूपनारायण सोनकर की अनुमति से डॉ. एन. पी. प्रजापति एवं प्रोफेसर बलिराम धापसे द्वारा
नमन प्रकाशन 423/A अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली 11002 में प्रकाशन एवं मुद्रण कार्य

संपादकीय / व्यवस्थापकीय कार्यालय

दून व्यू काटेज स्प्रिंग रोड, मसूरी-248179, उत्तराखण्ड दूरभाष: 0135-6457809 मो. 09410778718

शाखा कार्यालय

पी.डब्ल्यू. डी.आर-62 ए, ब्लाक कालोनी बैढ़न, जिला-सिंगरौली म.प्र. 486886, मो. 097529964467

सहयोग राशि-150/- रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्क (संस्था के लिए)-1000, रुपये पंचवार्षिक सदस्यता शुल्क (व्यक्ति के लिए)-2000/- रुपये
पंचवार्षिक संस्था और पुस्तकालयों के लिए 3000/- रूपये, विदेशों में $50 आजीवन व्यक्ति 6000/- रुपये 10000/- रुपये

सदस्यता शुल्क एवं सहयोग राशि-इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक AC83671001382 82 IFSC Code-IPOS0000001,Branch -SIDHI(NIRAT Prasad Prajapati)

नोट:- पत्रिका की किसी भी सामग्री का उपयोग करने से पहले संपादक की अनुमति आवश्यक है। संपादक - संचालक पूर्णतयः अवैतनिक एवं अध्यावसायिक है। नागफनी' में प्रकाशित शोध-पत्र एवं लेख, लेखकों के विचार उनके स्वंय के हैं, जिनमें संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं। "नागफनी" से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे। अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। सारे भुगतान मनीआर्डर बैंक/चेक/बैंक ट्रांसफर /ई-पेमेन्ट आदि से किये जा सकते हैं। देहरादून से बाहर के चेक में बैंक कमीशन 50/- अतिरिक्त जोड़ दें।

लेख भेजने के लिए Mail ID: nagfani81@gmail.com Website: http:naagfani.com

नागफनी

	पृष्ठ क्रमांक
संपादकीय.....	
साहित्यिक विमर्श	01
1. कन्नड भाषा और साहित्य का सांस्कृतिक संदर्भ-प्रो.संजय एल.मादार	2-4
2. मध्यकालीन हिन्दी काव्य : राम और कृष्ण के शब्द चित्रों के संदर्भ में-डॉ.नीतू परिहार	5-6
3. उदय प्रकाश की कहानियों में उदारीकरण की संस्कृति-डॉ.सुनील पाटिल	7-8
4. साहित्य के मानदण्ड एवं प्रेमचंद के निबंध-डॉ.अमित कुमार तिवारी	9-11
5. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के काव्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वरः-डॉ.संगिता चित्रकोटी	12-14
6. अज्ञेय की काव्य संवेदना : एक अन्तर्यात्रा-डॉ.वीणा जे	15-17
7. 'राम की शक्तिपूजा' मनोभावों की समग्रता का प्रबल साक्ष्य-त्रिनेत्र तिवारी	17-18
8. विष्णु प्रभाकर के स्वागत नाट्य (मोनो लॉग) का शिल्पगत अध्ययनः डॉ.कल्पना मौर्य	19-20
9. प्रेमचंद और आज का भारतः किसान विमर्श के संदर्भ में- वैशाली गायकवाड	21-22
10. निराला और उनकी राष्ट्रीय चेतनाः डॉ.समयलाल प्रजापति/डॉ.निरपत प्रसाद प्रजापति	23-24
11. 'सुख' तलाशते साठोत्तर समाज का 'दुख'-डॉ.दीपक जाधव	25-27
12. भारतीय अन्नदाता की त्रासदी का उपन्यास 'अकाल में उत्सव'-डॉ.मृत्युंजय कोईरी	27-29
13. हिंदी कहानियों में वृद्ध विमर्श : यथार्थवादी चिंतन -डॉ.सुरेश सिंह राठौड	30-32
14. मुक्तिबोध और फैन्टेसी : 'अंधेरे में' कविता के संदर्भ में- आरती सिंह राठौर/डॉ.रेशमा अंसारी	33-34
15. रस का आधुनिक काव्य से संबंध - डॉ.कविता त्यागी	35-36
16. जयप्रकाश कर्दम के कथा साहित्य में लोकजीवन-सुनीता	37-38
17. इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में सांस्कृतिक चिंतन के द्वारा राष्ट्रीय चेतना-श्रीमती मीना शर्मा	39-40
18. साहित्य से सिनेमा फिल्मांकन की समस्या पर विमर्श (हिन्दी सिनेमा के संदर्भ में)-संजय सिंह/डॉ.शाह आलम	41-43
19. 'नए इलाके में': नए इलाके की खोज करती कविताएँ-डॉ.अन्सा ए	44-46
20. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी की हास्य व्यंग्य कविता : डॉ.उर्विजा शर्मा	47-48
21. हिंदी साहित्य में विकलांगता का चित्रण-मोनी	49-52
22. निराला का अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह-डॉ.कृष्ण बिहारी राय	53-54
23. इक्कीसवीं सदी के प्रतिनिधि उपन्यासों में राजनीतिक मूल्य-श्रीमती मालती देवी	55-57
24. 'मरंग गोडा नीलकंठ हुआ' : पर्यावरण चिंतन का महाकाव्य-डॉ.अंजू लता/आलिया जेसमिना	58-62
25. सुशीला टाकभौरे की कहानियों में उत्पीडन एवं जीवन संघर्ष -डॉ.कुलदीप सिंह मीना	63-65
26. ढाई बीघा जमीन : आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में-डॉ.जयंत बोबडे	66-68
स्त्री विमर्श	
1. इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में स्त्री अस्मितामूलक प्रश्नों की संवेदना-डॉ.बलविंदर कौर	69-71
2. नारी अस्मिता के विविध आयाम-ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य-डॉ.नीरजा शर्मा	72-73
3. नारी अस्मिता और छिन्नमस्ता उपन्यास-प्रोफेसर आसाराम बेवले	74-76
4. स्त्री लेखन का नया प्रतिमानः स्त्री-भाषा-डॉ.यमुना प्रसाद रतूडी	77-79
5. 'रेत' उपन्यास में चित्रित स्त्री-डॉ. शीतल गायकवाड	80-81
6. कृष्णा अग्निहोत्री की 'और...और...औरत' आत्मकथा में नारी विमर्श-राकेश भील	82-83
7. स्त्री विमर्श के दायरे में 'बारबाला' का अनुशीलन-डॉ.मीना सुतवणी	83-86
8. नन्द चतुर्वेदी की कविता में स्त्री चित्रण-डॉ.विदुषी आमेटा/संगीता भारद्वाज	87-93
9. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ग्रामीण स्त्री जीवन का परिदृश्य :'बेनीमाधो तिवारी की पतोह'के विशेष संदर्भ में- बेबी विश्वकर्मा	94-96
10.वर्तमान समय में नारी की स्थिति-डॉ.पूजा शर्मा	97-98
11.अनामिका की कविता में स्त्री पक्षधरता-डॉ.उषस पी.एस.	99-101
12.'थेरीगाथा' में चित्रित स्त्री-जीवन की वैयक्तिक समस्याएँ- संजय यादव	101-102
13.शिवमूर्ति की कहानियों में स्त्री स्वर की अभिव्यक्ति-चंद्रावती	103-105
14.भगवानदास मोरवाल के उपन्यास 'वंचना'में व्यक्त नारी विचार-परेश सननसे/संजय कुमार शर्मा	106-107

पृष्ठ क्रमांक

आदिवासी विमर्श

1. आजादी की ईबारत 'जननायक टंट्या भील-डॉ.जगत सिंह मण्डलोई 108-111
2. मराठी आदिवासी काव्य में स्त्री जीवन- डॉ.संतोष गिरहे 112-113
3. हिंदी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जीवन प्रथाएँ- डॉ.राजेंद्र घोडे 114-115
4. आदिवासी विमर्श-रोहिणी सालवे 116-117
5. जनजातियों की सामाजिक अवधारणा और रीति-रिवाज-शीतल कुमार चौके 117-119
6. आदिवासी समाज और उसका हिंदी कविता से अंतर्संबंध-वेद प्रकाश सिंह 119-122
7. आदिवासी समाज के विविध रंग एवं हिंदी कहानी- रत्नेश कुमार 123-125

विविध विमर्श

1.भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी भाषा और साहित्य :पाठयक्रम के विशेष संदर्भ में - प्रोफेसर बळीराम धापसे 126-127
2.सामाजिक विज्ञान विषय के पाठ्यक्रम में उत्पन्न शिक्षकों की समस्याएँ एवं उनके कारण-महेश कुमार शर्मा 128-130
3. वैश्विक धरातल पर आतंकवादः मानवता के समक्ष एक गम्भीर चुनौती- डॉ.राजू पवार 130-132
4. आधुनिक भारत में किसान आंदोलन का ऐतिहासिक अध्ययन-डॉ.अंजू पाण्डे 133-137
5. इक्कीसवीं सदी में गांधी की बुनियादी शिक्षा दर्शन की उपादेयता-डॉ.मृदुला शर्मा 138-140
6. माध्यमिक स्तर पर सांस्कृतिक दृष्टि से स्वदेशी और पाश्चात्य पाठ्यक्रम का अध्ययन-डॉ.रामावतार 141-143
7. समाज और संस्कृति का अंतःसंबंध-डॉ.मीना 144-148
8. हाशिये के सामाजिक परिवर्तन के लिए दूरस्थ शिक्षा-डॉ.अमित राय 149-151
9. हिन्दी पत्रकारिताः एक चुनौती-डॉ.साधना 152-153
10.कन्नड और हिंदी अनुवादः एक विश्लेषण -डॉ.रेशमा एल.नदाफ 154-158
11. देशज व्यक्तियों के अधिकार और विस्थापन-डॉ.चित्रा माली 159-161
12. मीडिया का चेहरा और चरित्र-डॉ.शीतल प्रसाद महेन्द्रा 162-166
13. अध्यापकों की जीवन संतुष्टि का विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता पर पडने वाला प्रभाव -डॉ.सुनीता यादव 167-168
14.समाज पर सामाजिक माध्यमों का प्रभाव-आर.अरुणा/डॉ.जी.शांति 169-171
15.वैदिक वाङ्मय और सामाजिक चेतना- डॉ.कनक रानी 172-174
16.गांधी और विनोबा के अर्थशास्त्र में खादी- डॉ.मोहम्मद तारिक 175-176
17.सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की बुद्धि एवं शैक्षणिक निष्पत्ति का अध्ययन-डॉ.कैलाश पारीक 177-179
18.विंध्य क्षेत्र के बौद्ध स्थापत्य (देउर कोठार स्तूप समूह के विशेष संदर्भ में)-डॉ.गोविंद बाथम 180-181
19.भौगोलिक वातावरण का कृषि एवं जैव विविधता पर प्रभावः- गजेन्द्र सिंह राठौड/ डॉ.सुनील कुमार 182-185
20. शिक्षक-प्रशिक्षकों में उभरती व्यावसायिक अनिश्चितता का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव-मंजु यादव/प्रो.मनीषा वर्मा 186-188
21.चार वर्षीय एवं द्विवर्षीय बी.एड प्रशिक्षण प्राप्त नवनियुक्त शिक्षकों की शिक्षण प्रतिबद्धता-मुनेश यादव/प्रो.मनीषा वर्मा 189-193
22.आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में शैक्षणिक समस्याओं का निदान एवं उपचार-मुकेश बाला/ प्रो.मनीषा वर्मा 194-196

किन्नर विमर्श

1.समकालीन कहानियों में अभिव्यक्त किन्नर जीवन- डॉ.शबाना हबीब 197-198
2. इक्कीसवीं सदी के प्रमुख उपन्यासों में किन्नरों की स्थिति- डॉ.पी.सरस्वती 199-201
3. समाज के अभागों (किन्नर) का दर्द- डॉ.लक्ष्मीकान्त चंदेला 202-205
4. कुसुमलता मलिक की कहानियों में दिव्यांग विमर्शः अनिता देवी 205-207
5. किन्नर जीवन का सच्चा यथार्थ 'दुनियाँ जीत ली' कहानी के विशेष संदर्भ में- सनोज पी.आर 208-209
6. किन्नरों का इतिहास एवं मिथकः भारतीय साहित्य के विशेष संदर्भ में-प्रियंका कलिता 210-212
7. हिन्दी उपन्यासों में तृतीय प्रकृति की अस्मिता-डॉ.निम्मी ए.ए. 213-216

आदिवासी विमर्श

-रोहिणी माले
सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय
पुणे-411007

इक्कीसवीं सदी के साहित्य में विविध विमर्शों की काफ़ी चर्चा होती आई हैं। इन विमर्शों में दलित विमर्श, नारी विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, मुस्लिम विमर्श, आदिवासी विमर्श आदि का समावेश हैं। 'विमर्श' का अर्थ विचार विवेचन या परीक्षण से लिया जाना अपेक्षित होता हैं। यहाँ आदिवासी विमर्श पर प्रकाश डालने पर एक बात स्पष्ट होती हैं, कि साहित्य में आदिवासियों का होनेवाला शोषण तथा भेदभाव दर्ज किया हैं। आदिवासी से तात्पर्य, प्राचीनकाल से जंगलों में बसनेवाली मनुष्यजाति हैं। भारतीय संविधान में अनुसूचित जनजाति के रूप में आदिवासी जनसमुदाय का समावेश किया हैं। एक विश्लेषण के अनुसार, " भारत में अनुसूचित जनजातियों में से कुल ७१ प्रतिशत जनसँख्या छह राज्यों में निवास करती हैं। सन १९९१ की जनसँख्या के आधार पर भारत में अनुसूचित जनजातियों की कुल जनसँख्या ६.७८ करोड़ हैं।"[1] आदिवासी समाज की अपनी स्वतंत्र संस्कृति देखि जाती है। यह अपना समूह बनाकर रहते है, इनकी अपनी बोली होती है। उपजीविका के लिए ये समाज वनों पर निर्भर रहता है। गोंड, वारली, संथाल, बंजारा, मिझो, नागा, आदि अनेक जनजातियाँ महाराष्ट्र, झारखण्ड, बिहार, आंध्र आदि इलाकों में पायी गई है परन्तु आज इस समाज की दयनीय स्थिति कपरिचय करते हुए जयश्री जी लिखती है- " एक अनुमान के अनुसार अमेजोन के गहरे जंगलों के भीतर आज भी पच्चास से ज्यादा आदि मानवों के कबीले है, जिनका हमारी तथाकथित सभ्य दुनिया से कोई संपर्क नहीं...होता तो आज वे भी नहीं होते..."[2]

आदिवासी समाज में विविध कलारूप देखे जाते है। इनकी भाषा, खान-पान, रहन-सहन, आदि.में इनकी विशिष्ट संस्कृति के दर्शन होते है और यही इनकी पहचान है। आदिवासी जनसमुदाय जल, जंगल और जमीन को आत्मा मानकर अपनी जिंदगी इसी के बीच जीता आया है। इनका जीवन एक जिज्ञासा का विषय रहा है। आअज भी आदिवासी समाज बिजली, अस्पताल, शिक्षा जैसी मूलभूत सुविधाओ से वंचित दिखाई देता है। बड़ी विडम्बना की बात है, कि कुछ स्वार्थी लोग, भ्रष्ट शासन व्यवस्था इनका जल, जंगल और जमीन भी हथियाना चाहते है। बाजारवाद के नाम पर सदियों से आदिवासियों के साथ लूट का खेल खेला गया है। इक्कीसवी सदी की युवा साहित्यकार जयश्री रॉय अपने उपन्यास 'साथ चलते हुए' में आदिवासियों के जीवन की त्रासदी संवेदना के साथ व्यक्त करती है। उपन्यास का नायक कौशल तथा नायिका अपर्णा के जीवन की असीम त्रासदी है। कौशल इस त्रासदी से निकलना चाहता है और सामाजिक कार्यों में जुट जाता है। उसके इस कम में अपर्णा भी जुट जाती है। कौशल आदिवासियों के हक की लड़ाई लढता है। इस श्रमिक, सच्चे, भोले-भाले, अशिक्षित लोंगो के सर पर मौत मंडराती दिखाई देती हैं। कई बार इन्हें नक्सली घोषित कर नष्ट किया जाता है। जयश्री जी लिखती है- " धरती की यह आदिम संताने सभ्यता और विकास के दो पाठ में घुन की तरह पिसती जा रही है।"[3]

वैश्वीकरण के इस दौर में आदिवासी समाज आज भी विकासचक्र से जुड़ नहीं पा रहा है। सबसे बड़ी शोकांतिका यह रही है, कि विभिन्न ठेकेदारों सरकारी यंत्रनाओ के बीच इस समाज का शोषण किया जा रहा है। इसमें भी सबसे ज्यादा मार आदिवासी स्रीयों को झेलनी पड़ी है। "साथ चलते हुए" की सकारो कहती है, "गरीबों का कोई सच्चा हमदर्द नहीं... फिर वह प्रशासन के लोग हो, पुलिस हो, पूंजीपति या यह नक्शलवादी, हमें तो हर तरफ से मरना है... पुलिस लॉकअप में भी उसका बलात्कार होता है और अपने तथाकथित कामरेडों, गरीबों के हमदर्दों द्वरा भी... काल ही एक ग्यारह वर्ष की बच्ची का हमल गिराया गया था, वह भी जंगल में, इतना खून बहा की मर गई... ट्रेनिंग दिलवाने की बात करके उठा ले गये थे यही लोग, अब कहिए..."[4]

आदिवासी समाज और आदिवासी स्रीयों के अस्तित्व का प्रश्न आज भी एक गंभीर संकट के रूप में आदिवासी विमर्श के माध्यम से उपस्थित होता आया है।

हिन्दी साहित्य में संजीव, रनेद्र, रमणिका गुप्ता, महुआ माजी, निर्मला पुत्तुल आदि. कई साहित्यकारों ने इस विषय को लेकर अपनी लेखनी चलाई है। निर्मला पुत्तुल जी एक आदिवासी समाज में जन्मी स्री है, आदिवासी समाज का दुःख दर्द अपनी कविता के माध्यम से अत्यंत संवेदना के साथ निर्मला जी अभिव्यक्त करती जाती है-

"तुम्हारें हाथों बने पत्तल पर भरते है पेट हजारों
पर हजारों पत्तल भर नहीं पाते तुम्हारा पेट
कैसी विडम्बना है, कि
जमीन पर बैठ बुनती हो चटाइया
और पंखा बनाते टपकता है,

ISSN-2321-1504 Nagfani No. UTTHIN/2010/34408

तुम्हारे करियाये देह से टप...टप...पसीना..."[५]

प्रस्तुत कविता मात्र कविता न होकर स्त्री जीवन की पीड़ा अभिव्यक्त करती एक संवेदनशील कविता है। यह स्त्री हर काम में पुरुषों का हाथ बटाते हुए दोहरे शोषण का शिकार होती जाती है। साहित्य के माध्यम से आदिवासी वर्ग के प्रति पाठक के मन में संवेदना जगाने का कार्य साहित्यकारों ने किया है, साथ ही आदिवासियों का जीवन जीने का संघर्ष अत्यंत सजीवता के साथ अभिव्यक्त किया है।

निष्कर्ष –

आदिवासी समाज तथा संस्कृति अत्यंत प्राचीन है। आज भी इन लोंगो तक मूलभूत सुविधाएँ पहुच नहीं पा रही है। अनेक सरकारी योजनाए आज भी इन गरीब और परिश्रमी लोगों तक पहुच नहीं पाती। संपत्ति के नाम पर इनके पास जल, जंगल और जमीन ही है परन्तु ये प्राकृतिक संपत्ति हथियाने का प्रयास भी ठेकेदारों, कंपनियों तथा सरकारी व्यवस्था द्वारा हर बार किया गया है। रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत चीजों के लिए भी आदिवासी समाज को आज तक संघर्ष करना पड़ा है। देश की भ्रष्ट व्यवस्था के कारण इस समाज के अस्तित्व पर ही बहुत बड़ा प्रश्नचिहन लगा हुआ है। भारत की इस प्राचीन संपत्ति को बचाने का कार्य आज अनेक सेवाभावी संस्थाएं तथा साहित्य के माध्यम से किया जा रहा है। आदिवासियों के जीवन का अध्ययन करते हुए एक बात स्पष्ट होती है, कि ये लोग आज भी जंगल के किसी कोने में झाड़ू , चटाईयां बुनते, महुआ के फूलों को चुनते दरिद्रता से भरा जीवन जी रहें है। आदिवासी स्त्री का शोषण तो सदियों से खुले आम होता आ रहा है। इन लोगों को उनका हक्क और अधिकार दिलाने का कार्य आज विभिन्न माध्यमों से हो रहा है। आदिवासी विमर्श आदिवासियों के जीवन पर प्रकाश डालने का महत्वपूर्ण कार्य करता आया है , जिसपर सोचने के लिए पाठक बाध्य हो जाता है।

सन्दर्भ –

१. समाजशास्त्र विश्वकोश, सं. हरिकृष्ण रावत, पृ.- ३१४

२. फुरा के आंसू और पिघला हुआ इन्द्रधनुष, जयश्री रॉय, पृ. २५

३. साथ चलते हुए, जयश्री रॉय, पृ. ४९

४. वही, पृ. १४३-४४

५. नगाड़े की तरह बचते शब्द, निर्मला पुत्तुल